साहित्येतिहास - 3

DDE

Submitted By:
Dr. Mango Rani
Associate Professor
Directorate of Distance Education
Kurukshtra University
Kurukshetra - 132119

Programme
BA – General

Class III

Subject : Hindi

आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

- आदिकाल में उपलब्ध विभिन्न साहित्यिक विचारधाराओं के अध्ययन के लिए सामग्री को वर्गीकृत करना आवशयक, जैसे :
  - सिद्ध साहित्य
  - नाथ साहित्य
  - जैन साहित्य
  - रासो साहित्य
  - गद्य साहित्य
- इन्हीं विचारधाराओं में व्याप्त प्रवृत्तियाँ आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

सिद्ध साहित्य

- आदिकाल में बौद्ध धर्म विभिन्न सम्प्रदायों में विभाजित
- मन्त्रों द्वारा सिद्धि को प्रस्तुत करने वाले साधक 'सिद्ध' कहलाए
- सभी वर्णों के साधक, शूद्र अधिक, संख्या 28
- सिद्ध – सरहपा, शबरपा, लुइपा, कण्हपा, कुक्कुरिपा हिन्दी के प्रमुख कवि
- सरहपा द्वारा रचित 32 ग्रन्थ, 'दोहाकोष' प्रसिद्ध
- शबरपा जाति से क्षत्रिय, 'चर्यापद' रचना प्रसिद्ध
- पाखण्ड और आडम्बर का विरोध
- गुरू सेवा को महत्त्व
- वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा का घोर विरोध
- भाषा – 'संध्या भाषा '
- साधना–पद्धति की अभिव्यंजना मिथकों और प्रतीकों द्वारा
- गीत शैली, रूपक व उलटबांसियाँ, रहस्यात्मकता सिद्धों की अन्य प्रवृत्तियाँ

नाथ साहित्य

- वज्रयान की सहज साधना नाथ साहित्य के रूप में पल्लवित।
- नाथपन्थ की दार्शनिकता सैद्धान्तिक रूप से शैवमत के अन्तर्गत और व्यावहारिकता की **दृष्टि** से हठयोग से सम्बन्धित।
- नाथ–सम्प्रदाय में इन्द्रिय–निग्रह पर बल
- नौ नाथ–आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, चर्पटनाथ, चौरंगीनाथ, जालन्धरनाथ , भर्तृनाथ, गोपीचन्द्रनाथ और गाहणीनाथ।
- गोरखनाथ मत्स्येन्द्रनाथ के गुरू। प्राण–साधना, नाड़ी साधना, इन्द्रिय–निग्रह और गुरू महिमा पर अनेक छन्द। वाणी का संग्रह 'गोरखवाणी' नाम से प्रकाशित।
- नाथों का काव्य साधना–परक, उसमें काव्य तत्त्व का अभाव।
- सिद्धों की भांति इनके द्वारा अनेक रूपकों का प्रयोग।
- साखी, शब्द, दोहा, पद, सोरण छन्दों का प्रयोग।

जैन साहित्य

- जैन साहित्य धार्मिक **दृष्टि** से नहीं, साहित्यिक और भाषा –वैज्ञानिक **दृष्टि** से भी महत्त्वपूर्ण।
- जैन–ग्रन्थ –
  - देवसेन – 'श्रावकाचार', 'दर्शनसार',
  - स्वयंभू – 'पउमचरिउ'
  - पुश्पदंत – 'जसहर चरिउ'
  - धनपाल – '**भवि**सयत्त कथा'
  - रामसिंह जैन – 'पाहुड़ दोहा'
  - हेमचन्द्र – 'शाब्दानुशाासन'
- रामसिंह जैन द्वारा आत्मा की शुद्धि, आत्मानुभव और साधना पर बल।
- रास–काव्य परम्परा का प्रवर्तन जैन कवि शालिभद्र सूरी द्वारा लिखित 'भरतेशवर बाहुबलिरास' से हुआ।
- जिन धम्मसूरी के 'स्थुलि भद्ररास' और विजयसेन सूरी के 'रेवन्तगिरि रास' का महत्त्वपूर्ण स्थान।
- रास–काव्यों का मूल आधार धर्म।
- साधक और साधिकाओं के सद्चरित्रों को प्रस्तुत करने वाले काव्य भी रास–काव्य।
- वीर, श्रृंगार, करूण रस का समावेश।
- जैन कवियों द्वारा प्रबन्ध व मुक्तक दोनों शैलियों एवं अनेक प्रकार के छन्दों का अपनाया जाना।

रासो साहित्य

- राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के कारण रास–काव्य (वीरकाव्य) का जन्म।
- वीर काव्य डिंगल भाषा में लिखा गया।
- वीरगाथाएं 'रासो' नाम से प्रसिद्ध ।
- 'रासो' संस्कृत के 'रासक' शब्द से विकसित।
- महत्त्वपूर्ण रचनाएं – नरपति नाल्ह कृत 'विजयपाल रासो', चन्दवरदाई कृत 'पृथ्वीराजरासो', दलपति विजय कृत 'खुमान रासो', नथमल कवि कृत 'हम्मीर रासो'।
- रासो काव्यों में आश्रयदाताओं का यशोगान।
- अतिशयोक्ति के कारण रचित ग्रन्थ संदिग्ध।
- युद्ध और श्रृंगार के वर्णन में **राष्ट्रीयता** का अभाव।
- प्रबन्ध और मुक्तक दोनों शैलियों और अनेक छन्दों का प्रयोग।

गद्य साहित्य

- काव्य–रचना के साथ–साथ गद्य रचना का भी स्फुट प्रयास।
- अपभ्रंश गद्य साहित्य 7वीं से 13वीं शताब्दी तक प्राप्त।
- रचनाएं – राउलवेल, उक्ति–व्यक्ति प्रकरण, वर्ण रत्नाकर इत्यादि।
- 'राउलवेल' गद्य–पद्य मिश्रित चम्पूकाव्य की प्राचीनतम हिन्दी रचना।

Thank You